Teacher - Ravi Shankar Ray, Sub - Economy
Date - 10-09-2020, Class - BA-III

अनुभवों को 1733 ई० में "Horse Hording Industry" नामक पुस्तक द्वारा लोगों तक पहुँचाया। इसके अनुभव से लाभ उठाकर कृषि के क्षेत्र में काफी लोग लाभान्वित हुए।

(3) लॉर्ड टाउनशेण्ड —

इसके अनुसार कृषि क्रांति में सबसे प्रमुख तीन फसल पद्धति के स्थान पर चार फसल पद्धति अपनाना था। इसने क्रमशः गेहूँ, शलजम, जौ एवं अंत में लौंग बोने की परम्परा प्रारंभ की। इससे कम समय तथा कम स्थान में अत्यधिक उत्पादन प्राप्त हुआ।

इस दिशा में नारफोक के जमींदार कोक और हॉलखाम ने ~~हड्डी~~ हड्डी की खाद का प्रयोग कर उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि की। जॉर्ज तृतीय द्वारा कृषि कार्यों में अत्यधिक रुचि लेने के

कारण उसे कृषि जगत में भी कहा जाता है। सर आर्थर यंग ने कृषि सुधार हेतु 1784 ई० में " एनाल्स ऑफ एग्रीकल्चर ' शीर्षक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। राबर्ट बैकवेल ने पशुओं की दशा में सुधारने में अभूतपूर्व योगदान दिया। इससे दुग्ध उत्पादन में वृद्धि हुई।

(4) आर्थर यंग ⇒

इंगलैण्ड के एक धनवान कृषक आर्थर यंग (1742-1820 ई०) ने इंगलैण्ड, आयरलैण्ड एवं फ्रांस आदि देशों में घूम-घूमकर तत्कालीन कृषि उत्पादन की पद्धतियों का सूक्ष्म अध्ययन किया। अपने अनुभवों के आधार पर उसने एक नवीन प्रकार

से खेती के पद्धति का प्रचार किया। उन्होंने बताया कि छोटे-छोटे खेतों पर खेती करने से अधिक लाभकारी बड़े कृषि फार्मों पर खेती करना है। अतः उसने छोटे-छोटे खेतों को मिलाकर बड़े-बड़े कृषि फार्मों के निर्माण पर बल दिया। क्योंकि विभिन्न कृषि सम्बन्धी उपकरणों का आविष्कार हो चुका था और ये यंत्र बड़े खेती के लिए अत्यधिक उपयुक्त थे। उसने अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाने की दृष्टि से एनल्स ऑफ एग्रीकल्चर नामक पत्रिका भी निकाला।

आर्थर यंग के प्रभाव अंतर्गत फलीभूत हुए इंग्लैण्ड में छोटे-छोटे खेतों को मिलाकर एक बड़ा कृषि फार्म बनाने तथा उसके चारों ओर मेड़ बाड़ लगाने

का काफी समर्थन किया जाने लगा। इंगलैण्ड में 1792 ई० से 1815 ई० के मध्य 956 बाड़बंदी अधिनियम बनाये गए। इस प्रकार इंगलैण्ड में कई लाख एकड़ भूमि की बाड़बंदी की गई। इस बाड़बंदी द्वारा कृषि उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि हुई मगर छोटे-छोटे खेतों की समाप्ति से कई कृषकों को अपनी भूमि से बेदखल होना पड़ा और वे भूमिहीन मजदूर बन गये। अब ये कृषक ही बने मजदूर विभिन्न कारखानों में भर्ती किये गए और उन कारखानों के उत्पादन में वृद्धि की। इस प्रकार एक ओर कृषि उत्पादन बढ़ा तो दूसरी ओर औद्योगिक उत्पादन भी बढ़ा। औद्योगिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया।